तृतीय अध्याय

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन

तृतीय अध्याय

''ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन''

प्रास्ताविक -

कहानीकार अपनी कहानियों में जीवन के विविध प्रसंगों, घटनाओं तथा पक्षों को पाठकों के सामने रखने की कोशिश करता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहनयाँ दलित जीवन की पीड़ा, वेदना तथा जीवन संघर्षों का दस्तावेज हैं। उन्होंने निराधार दलितों के प्रति सवर्णों के आचार-विचार तथा उनके व्यवहार के कारण शोषित, पीड़ित एवं असहाय दलितों को तथा उनके विद्रोह को अनिवार्य विषय बनाकर अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलितों का केवल शोषण और उत्पीड़न पर आधारित समाज व्यवस्था ने ही उनकी स्वतंत्रता और आस्मिता नष्ट की है। उससे वह आवश्य मुक्ति चाहता है किन्तु मुक्ति की उनकी यह कामना समाज मात्र से बाहर निकलने के लिए नहीं बल्कि उस विशिष्ट प्रकार की सामाजिक व्यवस्था को तोड़ने के लिए है। जो दलितों की भावना और अस्तित्व पर आघात कर रही है। इसके लिए दलितों को सामाजिक संघर्ष में शामिल होने के लिए तैयार होना आवश्यक है। इसका एहसास ओमप्रकाश वाल्मीकि की हर कहानी दलितों को दिलाती है। उनकी कहानियाँ व्यक्ति स्वतंत्रता की प्रक्रियावादी चिन्तकों द्वारा की जानेवाली आराजक कल्पना के आधार पर शोषक वर्ग के अधिनायकत्व के विरोध की पुष्टि में दी जानेवाली तथा इस प्रकार की दलिलों को बेनकाब करनेवाली कहानियाँ सिद्‌ध हुई है।

भौतिक स्तर पर दलित विपन्न तथा अभावग्रस्त जीवन जी रहा है। वह क्रमश: भावात्मक स्तर पर असहाय और असमर्थ के एहसास से भरता गया है। उसकी संवेदना आहत होती रही है और वह दयनीय होता चला गया है। किन्तु इसके लिए कौन

जिम्मेदार है ? इसका निरूपण और साक्ष देनेवाली कहानियाँ ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ हैं। वे अपनी विशेष विधि के साथ अपने साहित्य में उतरते हैं। साहित्य के संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण जी कहते हैं - "साहित्य समाज का (दर्पण नहीं) एक्सरे है। वह दर्पण के समान समाज प्रतिबिम्ब ही नहीं दिखाता बल्कि समाज के अंग की हडड्डी-पसलियों से होकर वहाँ तक जाता है जहाँ बीमारी का संसर्ग हुआ हैं।"[1] इस कथन के अनुसार ही ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ सवर्ण समाज में दलितों को हीन देखने और उनपर आत्याचार करने का जो संसर्ग हुआ है उसपर करारी चौंट करती हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ जोखिम की संभावनाएँ पैदा करनेवाली ऐसी स्थितियों और सच्चाइयों के ऊपर पड़े आवरण को चीरकर उसके सही रूप तथा अर्थ को दो टूक भाषा और जरूरी शिल्प में अभिव्यक्त कर देती है। इससे दलित समाज को संघर्ष की प्रेरणा और उसका प्रतिरोध करनेवाली शक्तियों से जूझने की ताकत मिलती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का यह एक प्रातनिधिक संघर्ष है, इस संदर्भ में ताराचंद्र खांडेकर का कथन दृष्टव्य है -"एक आदमी पे होनेवाला अत्याचार का यह प्रश्न नहीं । एक आदमी पे होनेवाला अन्याय का यह प्रश्न नहीं। बल्कि एक वर्ग ने दूसरे वर्ग पर चलाया हुआ अत्याचार और अन्याय का प्रश्न है।"[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहानियाँ लिखने का प्रयोजन दलितों के जीवन को चारों ओर से देखना और उनकी दयनीयता प्रस्तुत करना ही नहीं बल्कि समाज परिवर्तन की मांग करना है। उनके संदर्भ में कंवल भारती लिखते हैं - "हिंदी में दलित साहित्य की दस्तक देने में जीन कुछ दलित लेखकों ने गंभीर भूमिका निभायी है उनमें ओमप्रकाश वाल्मीकि नि:संदेह एक प्रमुख नाम है। आज वे अपने सशक्त रचना कर्म से हिंदी क्षेत्र में किसी परिचय के मोहताज नहीं रह गये हैं।"[3]

1	डॉ. अर्जुन चव्हाण	- आधुनिक हिंदी कालजयी साहित्य, पृष्ठ xi
2	ताराचंद्र खांडेकर	- आम्बेडकर तत्वज्ञान,प्रचीती आणि अविष्कार,पृष्ठ 31
3	संपा. कंवल भारती	- 'सम्बोधन पत्रिका' - पृष्ठ 208

यथार्थ का अन्वेषण और वैयक्तिक अनुभवों की बौद्धिक अभिव्यक्ति ओमप्रकाश वाल्मीकि की एक उपलब्धि मानी जाएगी । उन्होंने अपनी कहानियों में स्पष्ट किया है कि समाज में जो जाति व्यवस्था है और सवर्णों का जो दलितों के प्रति दृष्टिकोण है वह लोकतंत्र की दृष्टि से बहुत ही शर्मनाक है। ऐसी व्यवस्था को देखकर मृगजल की तरह लोकतंत्र भी अस्तित्वहीन निरर्थक या फिर धोखेबाज शब्दमात्र रह गया है। कुछ प्रातनिधिक लोगों ने लोकतंत्र को महज औपचारिक बूर्ज्वा या दिखावटी व्यवस्था समझकर तिलांजली दे दी है। लोकतंत्र की सामजिक धारणा मृत्यावस्था लगती है। जब ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में हम सामाजिक गहराई देखते हैं। उनकी कहानियाँ दलित वर्ग के हृदय तक पहुँचकर उसकी हर व्यथा का अनुभव कराती हैं। इसलिए उनकी कहानियों में पात्र जीवन की अंध गलियों में से प्रवेश करके उपेक्षित, शोषित, पीड़ित और दर्दनाक मोड़ पर से गुजरते हैं। इस अध्याय में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में पात्रों का चरित्रगत अध्ययन प्रस्तुत है -

3.1 चरित्र-चित्रण -

जब तक एक संवेदनशील कहानीकार के सामने किसी जीवित व्यक्ति का चारित्रिक आदर्श न हो तब तक वह किसी भी चरित्र का निर्माण नहीं करता । वह आदर्श चरित्र लेखक के आस-पास का भी हो सकता है और लेखक स्वयं भी । लेखक कितना भी कहे कि उनकी कहानी के पात्र काल्पनिक हैं पर यह कदापि संभव नहीं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में जो पात्र उपस्थित है वे वास्तविक हुआ करते हैं। किसी भी कलात्मक रचना के जो पात्र हमारे सामने आते हैं वे अगर हमारे आसपास के होते हैं तो वह रचना हमे प्रभावित करती है। कहानी में चरित्र-चित्रण करना लेखक के लिए बड़ी कसौटी होती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि अपने जीवन यथार्थ और सार्वजनिक सत्य को लेकर अपनी कहानी में अवतरित हुए प्रतीत होते है। दलित-वर्ग पर होनेवाले अन्याय अत्याचार को

देखकर ओमप्रकाश वाल्मीकि जो अत्यंत बेचैन हुए हैं और इसी बेचैनी के परिणाम स्वरूप हम उनकी रचनाओं में दलित वर्ग का चित्रण पाते हैं। वे ज्वलंत सामाजिक समस्या अर्थात् दलित समस्या को अपना विषय बनाकर उसकी हर व्यथा को तीव्रता के साथ अंकन करते हैं। स्पष्ट है उनकी कहानी के पात्र भी उसी अवस्था को चित्रित करते हैं। चरित्र-चित्रण के संबंध में डॉ. आशा गुप्ता जी का कथन दृष्टव्य है -''कहानी में चरित्र-चित्रण करना कठिण कार्य है। संक्षिप्तता इस कठिनाई की जड़ है। तथापि लेखक सीमा में ही चरित्र को इस रूप में चित्रित करता है, जिसपर उस चरित्र का समस्त जीवन चलित होता है।''[1] इस उक्ति को सफल बनाने का कार्य ओमप्रकाश वाल्मीकि के हाथों स्वाभाविक रूप से हुआ है। उनके चरित्र-चित्रण में प्रमुख पात्रों के साथ कहानी में जो सहायक पात्र आए हैं उसे भी प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने पात्रों की ओर बारीकी से ध्यान दिया है। हर एक पात्र आवश्यकतानुसार और प्रसंगानुकूल कहानियों में प्रवेश करता है। किसी भी चरित्र का बिना मतलब आक्रमण नहीं दिखाई देता। सारांशत: यह कहा जा सकता है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चरित्र-चित्रण काफी सशक्त और प्रभावी सिद्ध होता है।उनकी कहानियों का चरित्रगत अध्ययन करने से पहले चरित्र-चित्रण का स्वरूप और उसके महत्त्व पर प्रकाश ड़ालना यहाँ आवश्यक लगता है।

3.2 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व और स्वरूप -

किसी भी कहानी में चरित्र-चित्रण महत्त्वपूर्ण होता है। चरित्र-चित्रण के माध्यम से पात्रों की गूढ़ता, प्रवृत्ति, दूर्बोधता, वृत्ति-भावना, सुख-दु:ख आदि के दर्शन होते हैं। प्रतापनारायण टंडन का कहना है ''चरित्र-चित्रण कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है इसी तत्त्व के अंतर्गत कहानी के पात्रों की भावनात्मक, बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानिक,

1 डॉ. आशा गुप्ता - हिंदी कथांजलि, पृष्ठ 5

प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं की अभिव्यंजना होती है।''[1] चरित्र-चित्रण के कारण कहानी में जान आती है। मानव-जीवन तथा चरित्र की विषमताओं और परिस्थिति को देखते हुए लेखक के लिए पात्रों का चरित्रांकन एक जटिल कार्य है और गंभीर दायित्व भी । ओमप्रकाश वाल्मीकि ने चरित्रांकन को महत्त्व देते हुए चरित्र के भाव-विचार, भावना, उनकी परिस्थिति आदि को प्रस्तुत किया है। चरित्र चित्रण का स्वरूप व्यापक भी हो सकता है जिससे कहानी चरित्र-प्रधान बन सकती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के चरित्र कम से कम शब्दों में बहुत कुछ बताते हैं क्योंकि हमेशा उनकी यह कोशिश रही है कि प्रभावशाली चरित्रों का निर्माण करना । जब उनकी कहानियाँ कुछ निश्चित उत्तर नहीं दे पाती तब उनके पात्र आगे बढ़कर कुछ सूझा देते हैं और पाठक अपनी चिंतन क्रिया के सहारे उसे सुलझाने की कोशिश में रहते हैं। '' कहानी में प्रभावशाली चरित्रांकन का समर्थन करते हुए व्यास जी ने बताया है कि कहानी में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि थोड़ी देर के लिए पाठक सब-कुछ भूलकर उसके पात्रों की भावनाओं के साथ बढ़ने लगे ।''[2] वाल्मीकि जी ने पात्रों के आंतरिक व्यक्तित्व और बाहरी व्यक्तित्व को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। उनकी कहानियाँ पात्रों की मनोदशा को स्पष्ट करती हैं। वे अपने पात्रों के माध्यम से (चरित्र-चित्रण) कम से कम घटनाओं और प्रसंगो की सहायता से कथानक, वातावरण, दृश्य अथवा प्रभाव की सृष्टि करते हैं। इससे यह निष्कर्ष पाते हैं कि कहानी में चरित्र-चित्रण महत्त्वपूर्ण होता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में पात्रों का चरित्र-चित्रण (चरित्रांकन) पात्रों के स्वभावानुसार निम्न प्रकार से प्राप्त होता है -

3.3 दबे हुए चरित्र -

दलितों की सारी समस्याओं के मूल में जाति एक ऐसा राक्षस बन कर आता है जो हर रास्ते में आतंकपूर्ण अवरोध बनकर खड़ा है। इससे दलित लोग अपने-

---

1 डॉ. प्रताप नारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 330

2 प्रताप नारायण टंडन - हिंदी कहानी कला, पृष्ठ 19

आपको अस्तित्वहीन और दबे हुए महसूस कर रहे हैं। वाल्मीकि जी की कहानियों में परिस्थिति से दबे हुए चरित्रों का अंकन हुआ है। जैसे -

3.3.1 मि.लाल -

'अंधड़' कहानी में जातिय हीनता से दबे रहकर बाद में पश्चाताप व्यक्त करनेवाले मि. लाल का चरित्र प्रस्तुत है। मि.लाल वैज्ञानिक के रूप में कार्यरत हैं। वैज्ञानिक की नौकरी मिलने के पीछे दीपचंद चाचा का बहुत बड़ा सहयोग था। लेकिन नौकरी मिलने के बाद सारे लोग अपने रिश्तेदार यहाँ तक कि दीपचंद चाचा को भी मि.लाल भूल जाते हैं। क्योंकि अपनी जाति का पता न चले इसका भय उनके मन में रेगता था। मि.लाल की धारणा थी कि जो प्रतिष्ठा, मान-सम्मान वैज्ञानिक होने के कारण मिल रहा है वह जाति के तुफान में न बह जाए । लेकिन सत्य से भागना जीवन नहीं है, बल्कि समस्याओं एवं परिस्थितियों का सामाना करने में ही पुरूषार्थता है। लेकिन मि. लाल अपने को मिला मान-सम्मान जाति के कारण घृणा और द्वेष में न बदल जाए, इस भय से कमजोर हो गए थे। इसलिए जाति छिपाना पर्याय मानकर जीवन व्यतित कर रहे थे। जैनेंद्रकुमार सही लिखते हैं - "बहुत अंशों में मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु तथा अपना मित्र होता है, मुझ में अमुक कमी है मुझ में आमुक हीनता है निरंतर इसकी रट लगाएँ रखने से तो वह आत्मविश्वास सर्वथा खो बैठता है।"[1] ठीक इसी हालत में मि. लाल जीवन जी रहे थे। वे अपनी पत्नी को भी अपने मायके नहीं जाने देते । क्योंकि वह जाएगी तो वे गंदे लोग भी यहाँ आयेंगे और यही मि. लाल को पसंद नहीं था। यहाँ तक कि वे अपने बच्चों से भी अपनी जाति और सगे रिश्तेदार छिपाके रखते हैं।

लेकिन दीपचंद चाचा की मृत्यु के बाद वे भावुक होते हैं और कहते हैं - "दीपचंद जी के बहुत एहसान थे मेरे ऊपर.... आज जो कुछ भी हूँ उन्ही की वजह से

---

1 जैनेंद्रकुमार - विचार-वल्लरी, पृष्ठ 155

हूँ......।''[1] आखिर वे अपनी पत्नी एवं बेटी समवेत दीपचंद चाचा के गाँव जाते हैं। गाँव में दीपचंद चाचा के घरवालों को भी आश्चर्य होता है कभी न आनेवाले मि.लाल के स्वभाव से सारे रिश्तेदार परिचित हो गए थे। गाँव का गंदा माहौल देखकर उनकी बेटी पिंकी हैरान हो जाती है। लेकिन जब पिंकी को पता चलता है कि ये लोग उसके रिश्तेदार हैं तब वह अपने पापा से जवाब पूछती है। लेकिन मि. लाल अपने हीनतापूर्ण व्यवहार के प्रति पश्चाताप व्यक्त करते हैं। पिंकी उत्तर देती है ''लेकिन डैड, किसी भी बदलाव के लिए भागना तो समाधान नहीं होता । भागकर तो हम उसे बढ़ा देते हैं।''[2] छोटी-सी पिंकी के बड़े जवाब से मि.लाल पश्चाताप में पड़ते हैं। उन्हें लगता है कि पिंकी ने उसे रंगे हाथ पकड़ लिया । पिंकी उन्हें कहती है ''आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था डैड़ । ये लोग क्या सोचते होंगे आपके बारें में ?''[3] ऐसी अवस्था में हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि अपनी कमियों को, अपनी अपूर्णताओं को समझे और उनको दूर करने का प्रयत्न करे । लेकिन सिवाय पश्चाताप के मि. लाल कुछ नहीं करते । झूठे मान-सम्मान ने उन्हें बहुत बड़े चक्रावात में फँसाया था। रात भर उन्हें नींद नहीं आती । सिर्फ पिंकी का सवाल उन्हें विचलित करने लगता था कि आपने यह ठीक नहीं किया डैड़ । जाति की हीनता से बचने के प्रयास में मि. लाल बहुत बड़े प्श्चाताप में डूबते हैं।

3.3.2 बिरजू की बहू -

ससुराल से ससुर ने निकाल दिया और मायका भी उसके लिए नरक से कम नहीं रहा ऐसे द्वंद्व में फँसी 'बिरजू की बहू का चरित्र ओमप्रकाश जी ने दर्दनाक, भावनात्मक एवं चित्रात्मक पद्धति से प्रस्तुत किया है।

'जिनावर' कहानी में बिरजू की बहू अपनी मर्जी के खिलाफ जगेसर के साथ अपना ससुराल छोड़कर मायके जा रही है। जगेसर गाँव की बहू बेटियों को गाँव

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('अंधड़' कहानी से) पृष्ठ 86
2 वही, पृष्ठ 92
3 वही, पृष्ठ 93

पहुँचाने का काम करता है। वह चौधरी के हुकूम से आज बिरजू की बहू को गाँव छोड़ने जा रहा है। बहू उदास मन से सिर्फ चल रहीं है। धीरे चलने वाली बहू को जगेसर आवाज देता है "बहू जी इस तरियों तो देर हो जागी, इब तो पंदरा कोस और जाणा है।"[1] बहू जी का इस तरह से धीरे चलना और उदास चेहरा जगेसर को अच्छा नहीं लगता । बातों-बातों में जगेसर को बिरजू की बहू बताती है कि वह अपनी मर्जी से मायके नहीं जा रहीं है, बल्कि उसे जबरदस्ती से निकाल दिया है। इसका कारण यह था कि उसका ससुर उसके चरित्र को दाग लगाना चाहता था। बेटी जैसी बहू का वह खसम बनना चाहता था। वह शिकायत किसे करती ? उसका पति कहता है -" मेरे बाप के खिलाफ एक भी लफज बोल्ली तो हाड़-गोड़ तोड़ के धर दूँगा । जिंदगी भर लूली-लँगड़ी बणके खाट पे पड़ी रहेगी .... औरत है तो औरत बणके रहे ।"[2] बहू बेचारी करती तो क्या करती ? पराए घर कोई भी लड़की पति के भरोसे ब्याही बनके जाती है और जब पति ही उसका नहीं तब उसका जीना नर्क से भी बदतर होता है। बहू की सास कहती है - " इस घर का तो रिवाज है। औरत सिर्फ इस्तेमाल की चीज है। इस घर में रिश्तों की मर्यादा का कोई मतलब ना है बहू।"[3] इस पर बहू क्या उत्तर देती? दोहरे अभिशाप में फँसी बहू को ससुराल छोड़ने के सिवा कोई रास्ता नहीं था। डॉ.राजेंद्रप्रसाद शर्मा का कथन दृष्टव्य है " नारी शरीर को देव मंदिर के समान पवित्र समझनेवाला व्यक्ति ही यदि नारी के सम्मान को नहीं समझेगा तो भला नारी का सम्मान कौन कर सकेगा "[4] जगेसर को बहू अपने मायके और मामा की बुरी वृत्ति के संदर्भ में बताती है " मेरा बाप कब मरा मैं जानती नहीं । मामा के घर में ही होश सँभाला..... मामी को गुजरे भी कई बरस हो गए थे। घर में सिर्फ तीन जन थे। मैं, माँ और मामा । दस साल की भी नहीं थी कि मामा ने इस अबोध शरीर को बरबाद कर दिया था।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('जिनावर' कहानी से) पृष्ठ 94

2 वही, पृष्ठ 99

3 वही, पृष्ठ 99

4 डॉ. राजेंद्रप्रसाद शर्मा - हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य में सामाजिक चिंतन, पृष्ठ 25

बहुत रोई-चिल्लाई थी ...... लेकिन कोई सुननेवाला नहीं था ..... माँ ने भी मुझे ही समझाने की कोशिश की थी।"[1] बिरजू की बहू कहती जा रही थी और जगेसर का शरीर और मन बहू के हालात जानकर पीघल रहा था। इससे बड़ा बहू का दुर्भाग्य यह था कि शादी के नाम पर उसके मामा ने उसे बेचा था। सिर्फ कहने के लिए बिरजू से ब्याह हुआ था। चौधरी अपनी करतूतों में सफल नहीं हुआ और बहू को जबरन निकाल दिया । बिरजू की बहू द्वंद्वात्मक स्थिति में फँसी दु:खों के साम्राज्य की मलिका बन गयी थी। मायका और ससुराल जिसके लिए कोई मायने नहीं रखता ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण बिरजू की बहू का दर्दनाक चित्रांकन वाल्मीकि ने यहाँ किया है।

3.3.3 कमल उपाध्याय -

'सलाम' कहानी में कमल उपाध्याय एक सहायक चरित्र है लेकिन वह चरित्र काफी कुछ बताता है । ब्राहमण का होते हुए भी उसे दलित समझकर लोग प्रताड़ित और अपमानित करते हैं। वह चुपचाप सहता है सिर्फ अपने दोस्त हरीश की खातिर । हरीश एक निचली जाति का युवक है, उसकी शादी में कमल चला जाता है। कमल के घरवालों का इस दोस्ती के प्रति विरोध था। लेकिन विरोध के बाद भी कमल ने दोस्ती के रिश्ते को आबाद कर दिया था। इस संदर्भ में ओमप्रकाश जी कहते हैं - "एक ही स्वभाव और लोगों में मित्रता हो सकती है।"[2] भले उसमें जाति सिना तान के क्यों न खड़ी हो । कमल हररोज की आदत के अनुसार सुबह चाय पीने दूकान में जाता है। कमल के निर्देश के अनुसार चायवाला चाय बनाता है, लेकिन "भला जात-पात को न माने वह हिंदू ही कैसा ?"[3] देवराज के उक्त कथन के अनुसार ही चायवाला जाति पूछता है। चायवाले को पता चलता है कि कमल चूहड़े की बारात में आया है। चायवाले के तमाम आदर्शवाद व्यवहार अचानक नफरत में बदल जाते हैं। कमल उसे बताता है कि मैं ब्राहमण हूँ फिर भी वह

1	ओमप्रकाश वाल्मीकि	- सलाम, ('जिनावर' कहानी से) पृष्ठ 101
2	ओमप्रकाश	- साहित्य भारती, पृष्ठ 29
3	डॉ. देवराज	- दोहरी आग की लपट, पृष्ठ 7

मानता नहीं । यहाँ डॉ. देवराज का कथन दृष्टव्य है -"भारतीयता का सबसे बड़ा आदर्श क्या यह है कि हम लाखों करोड़ों देशवासियों को पतित वा भ्रष्ट माने और उनसे रोटी-बेटी का व्यवहार करना हेय समझे ?"[1] चायवाला कमल को अपमानित करते हुए कहता है तू ब्राह्मण है तो चूहड़े की बारात में क्या मूत पीने आया है ? जातीयता क्या होती है ? उसकी जड़े समाज में कितनी मजबूत हैं इसका अनुभव कमल को आता है। सचमुच कमल समझ गया कि कितने जख्म दलितों को हजारों वर्षों से सहने पड़ रहे हैं। ब्राह्मण होकर भी कमल गालियाँ और अपमान सहकर चुपचाप बिना चाय के अपने मित्र हरीश के पास चला जाता है। स्पष्ट है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि ने मि. लाल , बिरजू की बहू और कमल उपाध्याय जैसे चरित्रों को प्रस्तुत किया है जो परिस्थिति से विवश और दबे हुए परिलक्षित होते हैं।

3.4 आदर्श चरित्र -

3.4.1 अम्मा -

विवेच्य कहानीकार ने अपनी कहानियों में आदर्श चरित्रों का भी चित्रण किया है। 'अम्मा' कहानी में आदर्श चरित्र के रूप में अम्मा हमारे सामने आती है। जवानी से लेकर बुढ़ापे तक काम करनेवाली अम्मा अपने वसुल और अच्छाई के लिए ही अपना जीवन जीति है। वह झाड़ू और कनस्तर लेकर दूसरों के घर की साफ-सफाई का काम करती थी और इसी से ही उसकी जीविका चलती थी। एक दिन वह झाड़ू लगाने के लिए मिसेस चोपड़ा के घर गई वहाँ मिसेस चोपड़ा के मित्र ने अम्मा के साथ जबरदस्ती करने का प्रयत्न किया तब अम्मा उसे पूरी ताकत से ढ़केलकर झाड़ू से उस पर प्रहार करती है। "अम्मा लगातार उसे पीटते हुए बेड़रूम में घुस गई। वह नीचे फर्श पर गिर पड़ा था। अम्मा की झाड़ू सड़ाक -सड़ाक उस पर पड़ रही थी। मुँह से गालियाँ फूँट रही थीं।"[2] उसके बाद वह घर अम्मा ने हमेशा के लिए छोड़ दिया । अपने हाथ में जो झाड़ूवाली जिंदगी है, वह बच्चों को

---

1 डॉ. देवराज - दोहरी आग की लपट , पृष्ठ 7

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('अम्मा' कहानी से) पृष्ठ 116

न मिले इसलिए वह रात-दिन काम करके बच्चोंको पढ़ाती है। अम्मा का एक बेटा नगरपालिका में क्लर्क है वह कमीशन खाता है, इस बात का पता चलने पर अम्मा उसे विरोध करते हुए कहती है ''बुराई की बात करते हैं शिबु ..... बुराई तो किसी का गला काँटने में भी ना है । बुराई तो ड़ाका ड़ालने में भी ना है। सूद पे रूपाया चलाने में भी ना है। पर बेट्टे.... करेक (जरा) उनकी भी तो सोच जो अपने ... जातकों के मुँह का कौर छीन के अपनी मीहनत की कमाई तेरे हाथ पे धर देवे हैं। ना बटट्े ना ..... कभी सोचा है उनकी दूरदशा पे ....कैसे जीव हैं वे लोग ?''[1] दूसरों के कष्ट की कद्र करनेवाली नारी गलत रास्ते से पैसे कमाने वाले अपने बेटे का भी विरोध करती है। आदर्शवत जिंदगी जीने वाली अम्मा उम्र के सातवें दशक में भी काम करती है। अपने पोतों द्वारा बेइज्जती का बर्ताव उसे सहा नहीं जाता और वह रोने लगती है। परिस्थिति से नाराज होकर वह अपने बेटों को इज्जत से जीने की सींख देती है। यहाँ अम्मा का आदर्श चरित्र हमारे सामने उभरता है।

3.4.2 जगेसर -

'जिनावर' कहानी में जगेसर नामक एक चरित्र है जो गाँव की बहू -बेटियों को मायके या ससुराल छोड़ने का काम करता है । जगेसर की जिंदगी सिर्फ चौधरी के इशारों में कैद थी। वे जो भी बताते जगेसर करता । चौधरी को वह भगवान मानता था। आज 'बिरजू की बहू' को छोड़ने की जिम्मेदारी जगेसर पर सौंपी गई। बहू का उदास चेहरा और धीरे चलना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। उसे पता चलता है कि बहू अपनी मर्जी से नहीं जा रहीं बल्कि उसे जबरदस्ती से निकाल दिया है। जगेसर को बहुत बुरा लगता है। घर से निकाल देने का कारण था कि बहू की इज्जत के साथ चौधरी खेलना चाहता था और बहू ने उसका विरोध किया । पति और सास भी बहू की ओर ध्यान नहीं देते, उल्टा उसे ही दोष देते हैं। चौधरी के प्रति जगेसर की घृणा बढ़ रही थी। इसका और एक कारण था कि चौधरी ने सतवीर की किसनी को तीन महीने बंद करके उसे मार डाला था। ''जगेसर असंमजस में था । उसे सुझ ही नहीं रहा था कुछ । 'जो कुछ बहू जी ने कहा यदि वह सच है तो ....नहीं'

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('अम्मा' कहानी से), पृष्ठ 120

अतंस में चीत्कार उठने लगी। जिंदगी का एक भयानक पन्ना उसके सामने फड़फड़ा रहा था। उसका सौच लौट-लौटकर बहू जी के ईर्द-गिर्द मँड़राने लगा।''[1] जगेसर ने कभी अच्छाई-बुराईओं का विचार नहीं किया जो भी चौधरी ने कहा उसका पालन किया । बिरजू की बहू बिच में ही बैठी है। वह मायके भी नहीं जाना चाहती क्योंकि उसका मामा भी राक्षस से कम नहीं । दस साल की आयु में उसने बहू को चकनाचूर किया था। अत: बहू सिर्फ जंगल में बैठना चाहती है। बहू की बातें सुनकर मारने-मरने की बातें करने वाला जगेसर मोम की तरह पिगल जाता है और बहू से कहता है ''ना .... बहू जी ... मैं लछमन ना हूँ जो सीता कू बियाबान जंगल में छोड़ के वापस चला जाऊँ''[2] वह बहू के आत्मविश्वास को जगाकर वहाँ से ले जाता है। उक्त शब्दों से उसके आदर्शमय विचारों के दर्शन होते हैं। वह बहू को न्याय दिलाने का एहसास देता है। स्पष्ट है कि यह एक आदर्श चरित्र के रूप में परिलक्षित होता है।

3.4.3 काले और भूरे -

'बैल की खाल' कहानी में काले और भूरे, ऐसे चरित्र हैं जो गाँव के मरे हुए प्राणियों को उठाकर गाँव से बाहर ले जाने का काम करते थे। बदले में इन्हें कोई पैसा नहीं मिलता था। पंडित बिरिज मोहन का बैल मर जाता है। सुबह से दोपहर तक इन दोनों का कोई पता नहीं था। पंडित गुस्से से तिलमिला रहा था। जैसे की काले और भूरे उसके नौकर है। सिर्फ पुरखों के कारण उनके नसीब में यह काम आया था। हमारे भारतीय परंपरा में सामाजिक रचना और वर्ण व्यवस्था पर आघात करनेवाला कवि प्रसादजी का कथन यहाँ दृष्टव्य है -''वर्णभेद सामाजिक जीवन का क्रियात्मक विभाग है। यह जनता के कल्याण के लिए बना परंतु द्वेष की सृष्टि में दम्भ का मिथ्या गर्व उत्पन्न करने में यह अधिक सहायक हुआ है।''[3] पंडित को गुस्सा आता है और वह काले और भूरे को गालियाँ देता है। वे दोनों

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('जिनावर' कहानी से), पृष्ठ 100

2 वही, पृष्ठ 102

3 शर्मा (डॉ.) विनय मोहन शर्मा - कवि प्रसाद 'आँसू' तथा अन्य कृतियाँ, पृष्ठ 54

चुपचाप सहते हैं, क्योंकि ऐंसा काम उन्हें अपने पुरखोंसे मिला है। न चाहते हुए भी यह काम उनको करना पड़ता है। बेचारों के इसी विषय को लेकर मुझे ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता दृष्टव्य लगती हैं -

'' कितनी सहन शक्ति !
कितना ध्यैर्य !
युगों युगों से दारिद्रय की विभिषिका में
गुम होती पीढ़ियाँ
मटमैले धुएँ में
अपनी हथेलियों पर सिर-टिकायें
बैठी है।''[1]

दरिद्रता ने इन दोनों को बेजान कर रखा था। जो भी प्राणी मरता उसकी खाल बेचकर इनके पास पैसा आता । ऐसे में जानवरों का डॉक्टर गाँव में आया है। इसलिए जानवर नहीं मरते और इनकी पैसों की व्यवस्था को विराम लग गया । अत: वे डॉक्टर के प्रति भी अपना आक्रोश व्यक्त करते हैं। 'बैल की खाल' उतारकर उसे बाजार ले जाने की व्यवस्था से रास्ते के पुल पर दोनों बैठे हैं। 'गोधन से बछड़ी पीछे छूट गई थी। चौकन्नी मुद्रा में बछड़ी दौड़ी चली आ रही थी। वह उसी रफ्तार से बिना रूके पक्की सड़क पर आ गयी थी। पलक झपकते ही तेज गति से आते ट्रक की चपेट में आकर बछड़ी गिर पड़ी..।''[2] और तड़पने लगी । काले और भूरे को बहुत बुरा लगता है। वह उसे बचाने का प्रयास करते हैं। पानी के लिए भटकने पर पानी भी नहीं मिलता और अचानक डॉक्टर का खयाल उनके मन में आता है और उसे बुलाने काले भाग जाता है। ''काले ने जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाएँ । अभी दस-पंद्रह दूर भी नहीं गया था, भूरे की आवाज आई ''काले जल्दी आ .....''[3]

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - बस्स ! बहुत हो चुका, पृष्ठ 85
2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('बैल की खाल' कहानी से), पृष्ठ 36
3 वही, पृष्ठ 37

बछड़ी मर गई थी। खाल का खयाल मन से निकालकर निराश होकर वे दोनों गाँव की तरफ चले गए । अचानक बछड़ी के मर जाने से उन्हें दुःख हो गया था। एक लंबी साँस लेकर दोनों बछड़ी के मरने की खबर देने निकल पड़े ।

बछड़ी की तड़फ ने उनके मन में करूण भाव पैदा किया । डॉक्टर के प्रति आक्रोश करनेवाले डॉक्टर के आवश्यकता को समझते हैं। अपने कमाई की खाल का खयाल वे छोड़ते हैं और तमाम कोशिशे बछड़ी को बचाने के लिए करते है। बछड़ी का दम तोड़ देना उन्हें भीतर तक आहत कर देता है। बड़ो के घटियापन और तथा कथित छोटों के बड़पन को उजागर करनेवाली यह कहानी मानवीय संवेदना में महत्त्वपूर्ण हो उठी है। किन्तु इसके साथ ही आदर्श चरित्र की प्रस्तुत करने की दृष्टि से भी अनूठी बन पड़ी है।

निष्कर्ष यह कि अम्मा, जगेसर, काले और भूरे जैसे चरित्र हमारे सामने अपनी वृत्ति एवं कृति से आदर्श विचार प्रस्तुत करनेवाले दृष्टिगोचर होते हैं।

3.5 खल-पात्र -

3.5.1 निशिकांत -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में खल पात्र भी चित्रित मिलते हैं जैसे - 'कुचक्र' कहानी में निशिकांत नाम का एक चरित्र है, जो खल स्वभाव का है। वह एक दफ्तर में कार्यरत है जहाँ आर.बी. भी है और जो एक दलित है। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था अचानक उनमें बिखराव पैदा हो जाता है, क्योंकि हेडक्वार्टर से जो प्रमोशन सूची आयी थी उसमें आर. बी. का नाम भी था। दफ्तर में मातम छा गया जैसे सब का अधिकार आर. बी. ने छीन लिया हो । आर. बी. के 'अंडर' काम करना निशिकांत के स्वाभिमान के खिलाफ था। इसलिए वह आर.बी. को फँसाने तथा प्रमोशन रूकवाने के लिए कई प्रयोग करता है। वह अपने सिनिअर शर्मा से शिकायत करता है। भंगी-चमारों के नीचे काम करना मुझे पसंद नहीं । निशिकांत की शिकायत की बात आर. बी. सुनता है और दोनों में तू तू-मैं मैं हो जाती है। आर. बी. को फँसाने के चक्कर में निशिकांत जुट जाता है। निशिकांत की

बेटी पंप अटेंड्ट के लफड़े में फँस जाती है, और एक दिन निशिकांत दोनों को रंगे हाथ पकड़ता है। अपने बेटी को दो-तीन थप्पड़ लगाकर पंप अटेंड्ट पर झपटता है। दोनों में बहुत हाथापाई होती है। इसका बदला लेने के लिए एक दिन पंप अटेंड्ट अपने साथियों समवेत निशिकांत के क्वार्टर में घुसकर जमकर पिटाई करता है। ''आर.बी. का क्वार्टर तीन-चार ब्लॉक छोड़कर था। वह खाना खाकर टहलने निकलता था। शोर सुनकर निशिकांत के क्वार्टर में जाकर देखा, कुछ लोग उसे बुरी तरह पीट रहे थे ।''[1] अचानक वे लोग भाग गए। निशिकांत की चोंट देखकर आर.बी. उसे अस्पताल पहूँचाता है। अपनी जान बचाने के लिए धन्यवाद देने की बजाय वह उल्टा आर.बी. पर भड़ास निकालने के लिए मौके का फायदा उठाते हुए पुलिस कंम्पलेट करता है कि, आर.बी. ने ही रात में घुसकर अपने साथियों समवेत मेरी पिटाई की । आर.बी. पुलिस में बे वजह फँस जाता है, वह पुलिस को बताता है कि मैंने निशिकांत की जान बचाई है और उसे अस्पताल पहुँचाया । जिन लोगों ने उसे पीटा है उनके नाम भी मैं जानता हूँ लेकिन नहीं । निशिकांत के चाल में आर.बी. सहित पुलिस भी फँस गई और निर्दोष आर.बी. को पुलिस पकड़कर ले जाती है, और निशिकांत अपने मतलब में कामयाब हो जाता है।

3.5.2 सूबेसिंह -

'खानाबदोश' कहानी में सूबेसिंह नाम का एक चरित्र है जो ईंट मालिक का बेटा है। मालिक के गाँव जाने के कारण सुबेसिंह ईंट भट्टी पर आया था। उसके चाल-चलन, रहन-सहन ठीक नहीं है। उसने ईंट भट्टी पर काम करनेवाली किसनी को अपने जाल में फँसाकर उसकी जिंदगी खराब कर दी थी। उसने किसनी को दफ्तर में काम लगाया था। एक दिन दफ्तर में किसनी नहीं आयी और मानो पर उसकी नज्र पड़ गयी। उसने असगर ठेकेदार को किसनी को बुलाने के लिए कहा लेकिन उसने रोकना चाहा तब सूबेसिंह ने कहाँ ''तुमसे जो कहा गया है वही करो । राय देने की कोशिश मत करो । तुम इस भट्टे

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('कुचक्र' कहानी से) पृष्ठ 112

पर मुँशी हो । मुँशी ही रहो, मालिक बनने की कोशिश करोंगे तो अंजाम बुरा होगा ।''[1] असगर ठेकेदार जानता था कि वह शैतान है। किसनी को जाल में फँसा रहा है। लेकिन किसनी की जगह ठेकेदार के साथ काम करनेवाला जसदेव जाता है। तब उसे गुस्से से सूबेसिंह पिटता है। उसकी चाल में मानो नहीं फँसती । इसलिए उन्हें बरबाद करने के लिए यह दूसरी चाल चलता है। मानो और सुकिया ने कई दिनों से रात-दिन काम करके ईंटे बनाई थी, उसे वह तोड़कर चकनाचूर करता है। इस कारण टूँटे ईंटों के पैसे भी उन्हें नहीं मिलते । उनके जीवन में निराशा फैलाकर सूबेसिंह उन्हें दु:खों में डूबों देता है। उनके सपनों को चूर-चूर कर देता है। सुबेसिंह के खल चरित्र से मानो और सुकिया बरबाद हो जाते हैं।

3.5.3 मुखिया -

'गोहत्या' कहानी में चित्रित पात्र मुखिया है जिसकी गाय मरती है ।लेकिन वह इस घटना को जान बुझकर 'गोहत्या' का मामला बताता है। सुअरों को मारने के लिए जंगल में जो आटा रखा था उसी से गाय मर गयी थी। लेकिन जान बुझकर मुखिया गरीब सुक्का को फँसाता है। क्योंकि इसने अपनी पत्नी को मुखिया के पास हवेली भेजने से इन्कार किया था और उसी इन्कार का बदला लेने के लिए वह गरीब सुक्का को गोहत्या के मामले में फँसाता है। पंचायत बैठती है। जीन लोगों पर शक है उनके नाम के परचे लिखकर लोटे में डाले जाते है और जिसके नाम की परची निकलेगी वही गाय का हत्यारा होगा । पंचायत निर्णय लेती है। पूर्वयोजना के अनुसार सुक्का का ही नाम निकलता है। उसे यह सजा दी जाती है कि हल के रूप में काम आनेवाली लोहे की फाल को तपाकर उसे सुक्का के हाथों थमाकर गऊ माता का नाम लेते हुए वह दस कदम चलेगा । ''सुक्का अपनी जगह बैठा मुखिया की साजिश पर सोचना चाहता था। किन्तु बदहवासी की हालत में सोच सही दिशा ग्रहण करने से पहले ही टूटकर बिखर रही थी। उसे अपनी दुल्हन का खयाल आया जिसने उसकी रगों में विश्वास जमाया था। ''[2] सुक्का ने उठने की कोशिश की तभी मुखिया के

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('खानाबदोश' कहानी से) पृष्ठ 127

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('गोहत्या' कहानी से) पृष्ठ 63

लठैत ने आकर उसे लाठी के एक सिरे से धकेला और बेबस, लाचार, गरीब सुक्का को तपी फाल ने चीखने के लिए मजबूर कर दिया ।

कहना जरूरी नहीं कि युक्त कहानी का मुखिया एक खल चरित्र के रूप में प्रस्तुत है।

3.6 विद्रोही चरित्र -

3.6.1 हरीश -

विवेच्य कहानीकार ने अपनी कहानियों में विद्रोही पात्रों की भी सृष्टि की है। 'सलाम' कहानी में हरीश नाम का एक चरित्र है, जो अपनी परंपरासे चली आयी प्रथा का विरोध करता है। इसके लिए उसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है लेकिन आधुनिक विचार का हरीश विद्रोही बनकर 'सलाम' प्रथा का डटकर विरोध करता है।

हरीश की शादी हो जाने के बाद उसके परिवार में और उसके समाज में एक रस्म है कि बड़े लोगों के घर जाकर 'सलाम' करे और मिली हुई वस्तुएँ ले आए । लेकिन आधुनिक विचार का हरीश इस प्रथा को नहीं मानता । हालाकि गाँव का बल्लू रांघड़ आकर ससुर से कहता है कि "जुम्मन तेरा जँवाई इब तक 'सलाम' पर क्यों नहीं आया। तेरी बेटी का ब्याह है तो हमारा बी कुछ हक बनता है। जो नेग-दस्तूर है, वो तो निभाना ही पड़ेगा।"[1] लेकिन लोगों के समझाने पर भी हरीश ने तीखे शब्दों में कहा "आप चाहे जो समझे ..... मैं इस रिवाज को आत्मविश्वास तोड़ने की साजिश मानता हूँ । यह 'सलाम' की रस्म बंद होनी चाहिए ।"[2] आखिर बल्लु रांघड़ आकर हरीश के ससुर को तीखे शब्दों में अपमानित करता है। यहाँ डॉ. धर्मवीर का कथन दृष्टव्य है -"आत्मा को ब्रह्म का अंश माननेवाले ये संकीर्ण हिंदू आखिर दलितों के प्रति ऐसा दृष्टिकोण क्यों रखते

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('सलाम' कहानी से) पृष्ठ 17

2 वही, पृष्ठ 17

है ?"[1] दूसरों के मन पर राज करने की कोशिश करनेवाले हिंदू आखिर दलितों को आदमी के रूप में कब स्वीकार लेंगे । परिस्थिति का सामना करते हुए हरीश स्वाभिमान को गिरवी रखनेवाली प्रथा का विरोध करता है। यहाँ वह विद्रोही रूप में प्रस्तुत हुआ नजर आता है।

3.6.2 ऋषिराज -

'सपना' कहानी में ऋषिराज नामक एक आदर्श चरित्र विद्रोही पात्र के रूप में हमारे सामने आता है। वह गौत्तम जैसे दलित का सच्चा मित्र है और मित्रता का धर्म निभाने के लिए सारे जमाने से विरोध करता है। विषय है मंदिर निर्माण का । कारखाने के अवासिय कॉलोनी में मंदिर बनाने का प्रस्ताव पारित किया था। मंदिर निर्माण कार्य में समिति प्रमुख नटराजन ने ऋषिराज को भी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी थी। ऋषिराज अपने दोस्त अनिलकुमार गौत्तम को साथ लेकर मंदिर निर्माण कार्य में सक्रिय था। "ऋषि को जब भी कोई अडचण आती थी या किसी जगह किसी विश्वसनीय व्यक्ति को भेजना होता था, वहाँ वह अक्सर अनिल कुमार गौत्तम को ही भेजता था।"[2] सभी के सहयोग से मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण होता है। उसकी प्राणप्रतिष्ठा का दिवस आता है। तब पंडाल में गौत्तम अपने परिवार सहित आता है। लेकिन नटराजन उसे आगे बैठने नहीं देता जूतों की रखवाली करने का काम बताता है। जब यह बात ऋषिराज को समझती है कि गौत्तम एस.सी.होने के कारण उसके साथ ऐसा व्यवहार हो रहा है तब उसे गुस्सा आता है। वह विद्रोह कर देता है। उसे भी तमाम विरोध होता है। पंड़ाल में तोड़-फोड़ भरा माहौल निर्माण होता है। गौत्तम भी उसे शांत रहने के लिए कहता है लेकिन वह कहता है " यह तेरी या मेरी लड़ाई नहीं है.... आज यह जगह छोड़कर तुम चले भी गए तो फिर इस लड़ाई को जारी रखना मुश्किल होगा। और फिर तुम क्यों जाओगे ! जाएँगे वे जो निकम्मे और जाहिल। यह मंदिर इनका कैसे हो गया आवो मेरे साथ .....।"[3] नटराजन और उनके साथियों ने बालाजी का जयजयकार

---

1 सम्पादक कुसुम चतुर्वेदी - नया मानदंड - एप्रैल-जून, 2003, पृष्ठ 25

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, (' सपना ' कहानी से)पृष्ठ 25

3 वही, पृष्ठ 30

किया। लोगों को इनकी बातें भी न सुनने दी । ऋषिराज ने गुस्से से पंड़ाल के बाँस को जोर से खींचा समुचा पंड़ाल गिर गया । धक्का बुक्की में लोग गिरने लगे। अपने मित्र की बेइज्जती ऋषि से सहन नहीं हुई। परिणाम यह हुआ कि पुलिस उन्हें पकड़कर ले गई। दलितों का गूँगापन सदियों से चलता आ रहा हैं। उसके प्रति संवेदना जगाने की कोशिश लेखक ने ऋषिराज के माध्यम से की है। यह एक विद्रोह और विरोध करने की क्षमता से युक्त पात्र के रूप में चित्रित किया गया है।

3.7 सोमनाथ -

'जंगल की रानी' कहानी में सोमनाथ एक ऐसा चरित्र है, जो सच को ढूँढ़ने के लिए अपनी जान दाँवपर लगाता है। उसकी संघर्षशील नीति उसे सच तक पहुँचने नही देती । समाज में व्याप्त कुरीतियों के मालिक उसे जीवन की अंतिम साँस लेने पर बाध्य कराते हैं।

'नया सवेरा' दैनिक के सम्पादक सोमनाथ तक यह खबर आती है कि किसी आदिवासी युवती की लाश रेल्वे लाईन के पास पड़ी है। सोमनाथ वहाँ जाकर कीमती साड़ी में लपेटी लाश का चेहरा देखता है तो अचंबित होता है। क्योंकि उसने कल ही इस युवती को जीते-जागते देखा था। वह जंगल की रानी मतलब आदिवासी कमली थी । पुलिस इस मामले को आत्महत्या का केस बनाकर रफा-रफा करना चाहती थी। लेकिन यह आत्महत्या नहीं खून है, यह सोमनाथ ने ताड़ लिया था। इसलिए वह सत्य की तलाश के लिए निकल पड़ता है। जिसके कारण किसनी शहर आयी थी,उस डिप्टी साहब के पास पूछताछ के लिए जाता है। लेकिन वे सोमनाथ पर क्रोधित होते हैं और घर से निकाल देते हैं। दिन भर की मालुमात वह 'नया सवेरा' में छाप देता है जिसके कारण शहर में खलबली मच जाती है।

कमली के गाँव में एक दिन ''उद्घाटन समारोह में एस.पी. और विधायक जी उपस्थित थे। कमली को देखकर उनका भी खक्तदाब बढ़ गया था। वे जल्दी से जल्दी

इस जंगली फूल की खुशबू पाना चाहते थे।"'[1] अपनी वासनाओं की कूट नीति को सफल बनाने के लिए विधायक के खास लोग कमली को लेकर आते हैं। विश्राम गृह के सन्नाटे में कमली पर डिप्टी साहब तेन्दुए की तरह लपट पड़ते हैं। कमली के प्रतिकार के कारण उसके कपड़े चिथड़ों में परिवर्तित हुए थे। एस.पी. अपनी बाह से कमली की गर्दन को घेर डालता है और अपनी ताकत से उसकी गर्दन मरोड़ता है जिसके कारण कमली का सुंदर देह लाश बन जाती है।

इस सत्य को ढूँढ़ने के लिए सोमनाथ संघर्षशीलता और विद्रोह अपनाता है। उसका संकेत दृढ़ निश्चय में हो बदल गया था। लेकिन इससे पहले सोमनाथ कुछ करता एस.पी. के लोग उसे पीटते हैं और उसे अपने जीवन की अंतिम साँसे गिननी पड़ती हैं। सत्य को ढूँढ़ने का प्रयास ही संघर्षशील जीवन में बाधा बनता है जिसके कारण सोमनाथ अस्पताल में अपनी जीवन की अंतिम साँसे गिन रहा है। सत्य को अपनाने का उसका सही विरोध उसे अस्पताल पहुँचाता हैं।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि यहाँ हरीश, ऋषिराज और सोमनाथ को वाल्मीकि जी ने विद्रोही पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है।

3.8 असहाय पात्र -

3.7.1 सतीश -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में असहाय पात्रों का चित्रण भी यथार्थ रूप में हुआ परिलक्षित होता है।

'कहाँ जाए सतीश ?' कहानी में एकदम असहाय पात्र के रूप मे छोटे से सतीश का चित्रण हमारे सामने आता है। जो अपने माता-पिता का घर छोड़कर खुद काम करके शिक्षा ले रहा था। वह मिसेस पंत के घर छोटी-सी जगह में रहता था और बल्ब

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये, ('जंगल की रानी' से) पृष्ठ 99

फैक्टरी में काम करके अपना खर्चा चलाता था। पिताजी का घर छोड़ने का कारण था कि वे सतीश को 'सफाई कर्मचारी' बनाना चाहते थे । लेकिन सतीश पढ़ना चाहता था। शिक्षा के माध्यम से सुनहरे भविष्य देखनेवाले सतीश के जीवन में अचानक बाँढ़ आती है। मिसेस पंत उसे घर से निकाल देती है। क्योंकि इस बात का उन्हें पता चला कि सतीश भंगी है। ''मिसेस पंत के शरीर में बिजली- सी दौड़ गई। जैसे कोई गलीज चीज शरीर को छू गई हो। वह गुस्से में भीतर गईं। बरामदे में रखे लंबे बाँस को उठाया और तार से पैंट कमीज को नीचे गिरा दिया ।''[1] जयप्रकाश कर्दम लिखते हैं कि - ''विभिन्न प्रयासों से ब्राह्मण समाज ने यह स्थापित करने की भरपूर चेष्टा की है कि सवर्ण सद्गुणों की खान है और शूद्र अत्यंज यानी दलित दुर्गोणों का घर''[2] मिसेस पंत सतीश के कपड़े भी बाँस से गिराती है, जैसे उसके कपड़े भी भंगी और अछुत हो । उसकी छोटी-सी उमर की भी मिसेस पंत को दया नहीं आयी और उसे रात को ही घर से निकाल दिया । सतीश पैदल छह किलोमीटर चला जाता है बल्ब फैक्टरी जहाँ वह काम करता था, इस आशा से जाता है कि ऐजाज साहब उसे एक रात रहने देंगे । लेकिन नहीं । बेचारा सतीश चला जाता है यह जाने बगैर कि उसे जाना कहाँ है। यहाँ सतीश की हालत को बहुत ही असहाय विवश पात्र के रूप में वाल्मीकि जी ने प्रस्तुत किया है।

3.7.2 सुक्का -

'गोहत्या' कहानी में बहुत ही दयनीय और विवश परिस्थिति में सुक्का हमारे सामने आता है। मुखिया जी की गाय मरती है। लेकिन जान बुझकर मुखिया इसे गोहत्या का मामला बताते हैं और अपनी वक्र दृष्टि निर्दोष बेचारे सुक्का पर डालते हैं। मुखिया जी की इस विचित्र मानसिकता का कारण था कि सुक्का ने अपनी पत्नी को मुखिया की हवेली भेजने से इन्कार किया था। परिणाम स्वरूप उसे गोहत्या के जुर्म में मुखिया द्वारा फँसाया जाता है। उसे सजा भुगतने के लिए विवश किया जाता है। बेवजाह उसे अत्याचार

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('कहाँ जाए सतीश ?' कहानी से) पृष्ठ 50

2 संपा. विभूतिनारायण राय - कथा साहित्य के सौ बरस, पृष्ठ 202

का शिकार बनाया गया है। स्पष्ट है कि कमजोर सुक्का असहाय रूप में प्रस्तुत किया दृष्टिगोचर हुआ है।

3.7.3 मानो और सुकिया -

'खानाबदोश' कहानी में मानो और सुकिया नामक गरीब पति-पत्नी का चित्रण है। ये दोनों ईंटों की भट्टी पर काम करके अपना जीवन व्यतीत कर रहे थें । अपने काम से मतलब रखनेवाले गरीब पति-पत्नी का एक ही सपना है खुद का पक्की ईंटों का घर बनाना । सुकिया जानता था कि पक्की ईंटों का घर बनाना आसान नहीं क्योंकि दरिद्रता ने पूरी ताकत लगाकर इनके जीवन पर आक्रमण किया था। फिर भी सपनों की पूर्ति की आशा से दोनों रात दिन काम करते थे। दोनों की "जिंदगी एक निश्चित ढ़र्रे पर चलने लगी थी। दोनों मिलकर पहले तगारी बनाते फिर मानो तैयार मिट्टी लाकर देती ।"[1] दोनों के काम पर ईंट मालिक और ठेकेदार खुश था। एक दिन मालिक मुखतार सिंह की जगह उनका बेटा सुबेसिंह भट्टे पर आया । क्योंकि मालिक कुछ दिनों के लिए बाहर चले गए थे। सुबेसिंह के चाल चलन ठीक नहीं है। उसने किसनी नामक ब्याही लड़की की जिंदगी खराब कर दी है। अब उसकी नजर मानों पर पड़ गयी । लेकिन पतिव्रता मानों को फँसाने में जब वह नाकामयाब रहता है तब वह दूसरे ढ़ंग से उन्हें बरबाद कर देता है। सुंदर सपने को संजोने के लिए रात-दिन दोनों ने जो कच्ची ईंटें बनाई थीं उसे वह एक रात में तोड़ देता है। दोनों की इतनी दिनों की मेहनत व्यर्थ हो जाती है। क्योंकि ठेकेदार कहता है टूटे ईंटों के पैसे नहीं मिलेंगे । मानो अपने नसीब पर रो रही थी । "सुकिया ने मानो की आँखों में बहते तेज अंधड़ों को देखा और उनकी किरकिराहट अपने अंतर्मन में महसूस की । सपनों के टूट जाने की आवाज उसके कानों को फाड़ रहीं थी।"[2] उन्होंने अपने सपनों को हवा के भरोसे उसके ही गोद में सौंपा और हताश होकर निकल पड़े अगले पड़ाव की तलाश में। स्पष्ट है कि ये दोनों पति-पत्नी असहाय रूप में चित्रित किए हुए लक्षित होते हैं।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('खानाबदोश' कहानी से) पृष्ठ 124

2 वही, पृष्ठ 131

3.7.4 सुभाष सोनकर -

'घुसपैठिये' कहानी में सुभाष सोनकर एक दलित युवक अप्रत्यक्ष रूप से हमारे सामने आता है। वह मेडिकल कॉलेज का छात्र है। वहाँ की स्थिति दलित छात्रों के लिए नरक यातना से कम नहीं थी। तरह-तरह की यातनाओं का सामना करना पड़ता था। मेडिकल कॉलेज के लोग इस ओर ध्यान नहीं देते थे। एक "दिन हॉस्टल के एक कमरे में विकास चौधरी और सुभाष सोनकर को दरवाजा बंद करके पीटा गया ।"[1] कारण कुछ नहीं था। रैगिंग होता तो फर्स्ट इयर के सभी छात्रों के साथ ऐसा बर्ताव होता, लेकिन पीटे गए थे सिर्फ ये दोनों । बस में आते जाते दलित छात्रों को पिटाई सहनी पड़ती । एक दिन सोनकर को भी इस स्थिति से गुजरना पड़ा। बस में प्रणव मिश्रा ने सोनकर के बाल पकड़े और अपनी ओर खींचने लगा । सोनकर बाल छूड़ाने की कोशिश करता रहा । उसकी जाति पूंछकर "लांत घूँसोंसे अधमरा कर दिया । पूरी बस मे ठहाके गूंज रहे थे .... बाबासाहब के नाम पर गालियाँ दी जा रहीं थी।"[2] कॉलेज की शासन व्यवस्था और बाकी के छात्रों को दलितों का मेडिकल प्रवेश 'घुसपैठ' लगती थी । अपने पर हुए अन्याय के प्रति सुभाष सोनकर ने प्रणव मिश्रा के खिलाफ पुलिस में नामजद रपट लिखवाई परिणाम स्वरूप उल्टा सोनकर को ही फेल कर दिया गया । दलितों का दु:ख-दर्द बाँटनेवाला कोई न था। सोनकर की अन्याय-अत्याचार सहने की ताकत और आत्मविश्वास कमजोर हुआ और इस अंधी समाज व्यवस्था के कारण उसकी जीवन यात्रा से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्ती हो गयी । कहना आवश्यक नहीं कि यह चरित्र भी असहाय,दीन, हीन और कमजोर रूप में प्रस्तुत हुआ है।

3.7.5 कंवल कुमार -

'ब्रह्मस्त्र' कहानी में कंवल कुमार एक असहाय चरित्र के रूप में हमारे सामने आता है। अरविंद नैथानी और कंवल कुमार अच्छे दोस्त हैं। कंवल कुमार दलित

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये, ('घुसपैठिये' कहानी से) पृष्ठ 15

2 वही, पृष्ठ 16

होते हुए भी दलितपन ने इनके पवित्र मित्र प्रेम पर आक्रमण नहीं किया था। अरविंद की शादी तय हो जाने पर वह खुश खबरी देने कंवल के घर आता है। कंवल को बँक से छुट्‌टी मिलना लगभग असंभव होते हुए भी किसी तरह छुट्‌टी निकालकर वह शादी के लिए चला जाता है। अरविंद कंवल को बस में बैठने को कहता है, लेकिन बस में पैर रखने से पहले ही पंडित माधव प्रसाद भट्‌ट उसे टोकता है, "तू ! कहा जा रहा है ?"[1] पंडित अरविंद के पिता से कहता है "विष्णुदत्त नैथानी यह क्या कर रहे हैं आप ? नैथानीयों की बारात में डोम....नहीं हो सकता ..... जान बुझकर मक्खी नहीं निगली जाती है।"[2] विष्णुदत्त के समझाने पर भी पंडित मित्र प्रेम को नहीं समझता । स्थिति को और विकृत बनाने के लिए वह 'ब्रह्मास्त्र' छोड़ता है कि यह इस बस में जाएगा तो मैं नहीं जाऊँगा, मैं यही से लौट जाता हूँ । विष्णुदत्त की समझ में नहीं आ रहा था, क्या करें । पंडित उनके परिवार के पुरोहित थे। उन्हें तो टाला नहीं जा सकता । इस परिस्थिति से कंवल कुमार टूट जाता है। वह सब कुछ समझ गया था। अरविंद के समझाने पर भी परिस्थिति में बदलाव नहीं आया था। सबके सामने एक ही प्रश्न था, कि कंवल को कैसे वापस भेज दे ? अरविंद के उत्साह ने सन्नाटे की जगह ले ली थी। लेकिन विचारी और आदर्श कंवल ने अपने मित्र अरविंद की स्थिति को पहचान लिया और उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा " दिल छोटा मत कर यार .... अपना क्या है .... तुम खुशी-खुशी से बारात लेकर जाओं... हमारी चिंता मत करो।"[3] कंवल अपने मित्र की स्थिति और दशा को बिना कुछ कहे वह पहचान कर असहाय होकर निकल पड़ता है। अपने मित्र की असहाय स्थिति देखकर अरविंद की आँखें भर आई थीं। लेकिन कंवल उन आँखों को बेगैर देखे वहाँ से निकल पड़ता है।

भले ही ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ दलित जीवन से संबंधित हो लेकिन उनकी कहानियों के पात्रों में गुणात्मक परिवर्तन का दर्शन आवश्यक मिलता है। यहाँ

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये, ('ब्रह्मास्त्र' कहानी से) पृष्ठ 83

2 वही, पृष्ठ 84

3 वही, पृष्ठ 87

असहाय चरित्रों के रूप में सतीश, सुक्का, मानो और सुकिया, सुभाष सोनकर और कंवल कुमार के चरित्रों को प्रस्तुत किया गया है जो परिस्थिति से बिल्कुल असहाय प्रतीत होते हैं।

3.8 तनावग्रस्त चरित्र -

3.8.1 सुमेर -

विवेच्य कहानियों में तनावग्रस्त चरित्रों की भी सृष्टि हुई है। 'मुंबई कांड़' कहानी में काफी तनावग्रस्त स्थिति में सुमेर के दर्शन होते हैं। इसलिए उसके मन में विकृत विचारों की भी चहल-पहल होती है। लेकिन अंत में वह आदर्श विचार प्रस्तुत करता है।

सुमेर दफ्तर में हमेशा राजनीतिक चर्चाओं से हमेशा दूर रहता था। लेकिन जान बुझकर लोग उसे ऐसे विषय में घसीट लेते और उसे टोकते रहते । क्योंकि वह दलित है। इस लिए वह तनावग्रस्त रहता था। ऐसे में उसे '- मुंबई कांड़ ' की याद आती है। वह मुंबई से काफी दूर था । लेकिन दलितों के कांड़ की घटना उसके मन मस्तिष्क को कूँद कर रही थी । सुमेर ने सभी चैनेल के समाचार सुने । " मुम्बई में डॉक्टर अम्बेडकर की मूर्ति को अपमानित किया जाना और अम्बेडकर समर्थकों पर गोली चलाना, उसके बचे-खुचे विश्वास को तोड़ रहा था।"[1] उसे ठीक से नींद भी नहीं आ रही थी । अलग-अलग खयाल उसके मन में आ रहे थे। इस संदर्भ में सांसद और विधायकों से मिलकर अपना विरोध दर्ज करने और आत्मदहन करने का विचार भी आया । अखबारों में वक्तव्य दे, कलेक्टर कार्यालयों में विरोध दर्ज करे, ऐसे अनेक खयालो में वह बंद होता जा रहा था। क्योंकि मुंबई कांड़ के हादसे से वह चकनाचूर हो गया था। अंत में वह यह निश्चय करता है कि किसी मूर्ति को अपमानित करे और इस दिशा से उसकी कोशिश शुरू होती है। मूर्ति को अपमानित करने के लिए वह जूतों की तलाश शुरू करता है। जूतों की "माला बनाते-बनाते उसे खयाल आया कि वह इस माला का उपयोग किस मूर्ति के लिए करेगा, इस पर तो विचार किया ही नहीं। शहर में कुल चार मूर्तियाँ थीं । डॉ. अम्बेडकर, गांधी, नेहरू और

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये, ('मुंबई कांड़' कहानी से) पृष्ठ 31

पटेल की ।''[1] वह विचलित हो जाता है और गांधी की मूर्ति को निशाना बनाता है, ऐसे विकृत विचारों में वह पूरा उलझ गया था। अचानक उसके मन में आता है ''अरे ! मैं यह क्या करने जा रहा हूँ। मुंबई में किसी ने मेरे विश्वास पर चोंट की और मैं यहाँ किसी की आस्था पर चोट करने जा रहा हूँ । कुछ गांधी को 'बापू' कहते हैं और कुछ अम्बेडकर को 'बाबा' : वहाँ बाबा कहनेवाले मारे गए, यहाँ 'बापू' वाले मारे जा सकते हैं ।''[2] मारे तो निर्दोष ही जाएँगे । इस आदर्शमय विचार से उसकी कनपटियाँ गर्म होती हैं और वह एक गुनाह के बदले दूसरा गुनाह नहीं करेगा इस विचार से वापस लौटता है। स्पष्ट है कि उसका चित्रण तनावग्रस्त चरित्र के रूप में हुआ नजर आता है।

3.8.2 निदेशपाल जाटव -

'निदेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन' कहानी में दिनेशपाल तनावग्रस्त स्थिति में हमारे सामने प्रस्तुत होता हे। दिनेशपाल जाटव ने उपसंपादक पद के लिए आवेदन किया था। जो भी अनुभव एवं योग्यता की आवश्यकता थी उसके पास थी। साथ ही उसने विभिन्न पत्रिकाओं में अलग-अलग विषयों पर लेख भी लिखे थे। आवेदन भेजने के बाद भी उसे बुलावा नहीं आया तो वह खुद सम्पादक से मिलने कलकत्ता चला गया । लेकिन वहाँ संम्पादक मनमाने ढ़ंग से इसके साथ पेश आते हैं। वह निराश मन से उनके दफ्तर से वापस लौटता है । ''वह दरवाजे तक भी नहीं पहुँच पाया था कि सामुहिक ठहाका गूँजा ....'अब पत्रिकाओं में भी आरक्षण माँगनेवाले आने लगे .... अब भंगी-चमार भी सम्पादक बनेंगे।''[3] वह निराश होकर वापस आता है। दिनेशपाल जाटव तनावग्रस्त स्थिति में अपना नाम बदलने का निश्चय करता है। दिनेशपाल जाटव से वह दिग्दर्शन बन जाता है। दिग्दर्शन के ऊपर उठते नाम से दिनेशपाल जाटव नाम धीरे-धीरे गुम होता गया । उसके प्रयत्नों से वह उपसंपादक बनता है। दिग्दर्शन जहाँ काम करता था वहाँ उसके साथ और दो उपसंपादक थे।

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - घुसपैठिये, ('मुंबई कांड' कहानी से), पृष्ठ 33

2 वही, पृष्ठ 34, 35

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि- घुसपैठिये, (दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन से), पृष्ठ 69

एक दिन शेष दो की छुट्टी से सारा भार दिग्दर्शन पर आता है। उसने मुखपृष्ठ की तैयारी की थी। अचानक एक समाचार उसके हाथ लगा । उसे किसी ने तार से भेजा था। लेकिन दलितों संबंधी समाचार इस पत्रिका में छापने नहीं थे। वह काफी परेशान हो जाता है। उस समाचार को ''ज्यादा देर तक अनदेखा करने का हौसला दिग्दर्शन नहीं कर पा रहा था । अदिम युगीन सभ्यता और संस्कृति अनमानुष की शक्ल में शब्दों का रूप धरकर आ गई थी।''[1] दिग्दर्शन उस समाचार को आखिर छाप देता है। राहत कर्मियों ने दलितों की सड़ी लाशों को छूने से इन्कार किया । इस समाचार ने उसके जीवन में तहलका मचाया था। हररोज की तरह वह काम पर जाता है। उसके टेबल पर सजा के रूप में उसे लिफाफा मिलता है। उसपर लिखा था 'योर सर्विसेज आर टर्मिनेटिड फ्रॉम टुडे' (आपको आज से नौकरी से निकाल दिया जाता है) उसके दिमाग में विचारों के बवंडर उठ रहे थे। सच को सच कहना गलत है। आखिर उसका अपराध क्या हैं ? उसकी स्थिति तनावग्रस्त हो जाती है और इस स्थिति में उसे पुराना नाम याद आता है दिनेशपाल जाटव ।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि मुंबई कांड़ और दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन जैसे पात्र तनावग्रस्त रूप में प्रस्तुत हुए है। सुमेर और दिग्दर्शन जैसे चरिंत्र पाठकों को विशेष रूप से प्रमाणित तथा द्रवित करते हैं।

3.9 कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण चरित्र-

3.9.1 बिरम की बहू -

'ग्रहण' कहानी में बिरम की बहू का चित्रण है जिसे हम भावनिक भी कह सकेंगे और स्वार्थी भी । बिरम की बहू को आए हुए दो साल हो गए थे। फिर भी गोद में बच्चा न हुआ । चौधरी के घर में चर्चा होने लगी । चौधराइन की चिंता बढ़ने लगी। देवि-देवताओं की मन्नते माँगी जा रही थी ''चौधरी के खाते-पिते घर में एक तनाव पसर गया

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि- घुसपैठिये, ('दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन' से), पृष्ठ 70

था, चुपके-चुपके । आस-पड़ोस की औरतों को भी बातचीत के लिए विषय मिल गया । अरे बेचारी की किस्मत खराब है। इतना रूप-रंग दिया .... पर कोख खाली ही दी ।''[1] ऐसी घृणा-स्पद बातों से बहू का जी कतरा उठता था। उसने अपने पति को सलाह दी कि शहर जाकर किसमें खोट है इसकी जाँच कर आते हैं। पर परिणाम स्वरूप उसे सिर्फ एक जोरदार थप्पड़ का ही जवाब मिलता है। चौधराइन भी आशिष की बजाय गालियाँ देने लगी। बिरम की बहू चुपचाप सह लेती थी। एक दिन चौधराईन चल बसी । उसकी मौत की जिम्मेदारी भी उसके ही सिर पर मढ़ी गई। इन सबसे बचने के लिए बहू को एक बच्चा चाहिए था । चंद्र ग्रहण की खबर ने भंगी बस्ती में हर्षोल्लास भर गया । रात होते ही बड़े-छोटे, बूढ़े जवान लड़कियाँ अनाज माँगने निकल पड़े। उनमें रमेसर भी सहभागी था। भंगी लोग हवेली पे भी अनाज मांगने के लिए गए । सभी लोगों को अनाज बहू बाटती है। रमेसर के वक्त ही टोकरी का अनाज खत्म हुआ । बहू उसे अंदर भेजती है। हवेली में सब सो रहे थे। ''अचानक बिरम की बहू के मस्तिष्क में पुरूष-गंध बिजली-सी कौध गई। उसकी आँखें तेज-तेज चलने लगी ।''[2] वह अपने आपको रोक न सकी और रमेसर की बाहों में खुद को समर्पित कर दिया । दोनों एक-दूसरे में समा गए । ग्रहण के लगभग तीन महीने बाद खबर पूरे गाँव में फैल जाती है कि बिरम के बहू के पाँव भारी हो गए हैं। तब चौधरी के घर में फिर आनंद भरा माहौल छा जाता है। लेकिन जिस रमेसर की वजह से उसकी जिंदगी में खुशियाँ आयी थीं उसको वह दुबारा पलट कर भी देखती नहीं। जैसे इस्तेमाल किया और फेंक दिया ।

सामाजिक दबाव और भय के कारण असलियत को छिपाने वाली स्त्री का चरित्र यहाँ प्रस्तुत हुआ है जो सहजता से युक्त नजर आता है।

3.9.2 अनपढ़ सुदीप के पिता -

ओमप्रकाश जी 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' कहानी में एक चरित्र का दर्शन

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('ग्रहण' कहानी से) पृष्ठ 64

2 वही, पृष्ठ 68

कराते हैं। सुदीप के पिता पूर्णत: अनपढ़ है लेकिन अपने बच्चों को स्कूल में भेजने का विचार उनके मन में आता है। वह भी उस वक्त "जबकि पूरी बस्ती में पढ़ाई-लिखाई की ओर किसी का ध्यान नहीं था ।"[1] वे मास्टर के पास जाकर हात जोड़कर गिड़गिड़ाते है "मास्टरजी इस जातक कू अपनी सरण में ले लो । दो अच्छर पढ़ लेगा तो थारी दया ते यो बी आदमी बाण जागा । म्हारा जिनगी बी कुछ सुधर जागी ।"[2] सुदीप का स्कूल प्रवेश होने के बाद वे बड़े खुश हो जाते हैं। कुछ सालों बाद सुदीप को मास्टरजी पहाड़े याद करने को कहते हैं। सुदीप घर में पहाड़े रटते हुए कहता है कि " पच्चीस ही कम पच्चीस,पच्चीस दुनी पच्चास, पच्चीस तिया पचहत्तर पच्चीस चौका सौ, जैसे ही पच्चीस चौका सौ कहा तब पिताजी टोककर कहते है कि पच्चीस चौका डेढ़ सौ होते हैं। सुदीप के कहने पर भी पिताजी का विश्वास नहीं होता । क्योंकि पिताजी चौधरी से प्रभावित थे और वह चौधरी पच्चीस चौका डेढ़ सौ के हिसाब से सुदीप के पिताजी को कई सालों से लूट रहा था और वह बेचारा सहता गया अनपढ़ता की वजह से । जब सुदीप बड़ा होता है तो इसी विषय को लेकर अपने अनपढ़ पिताजी को विस्तार पूर्वक बता देता है कि पच्चीस चौका डेढ़ सौ नहीं सौ होते हैं। जब पिताजी को विश्वास हुआ तब " उनका विश्वास जिसे पिछले तीस पैंतीस सालों से वे अपने सीने में लगाए चौधरी के गुणगान करते नहीं अघाते थे, आज अचानक काँच की तरह चटककर उनके रोम रोम में समा गया था। "[3] 'चौधरी पर विश्वास करने का फल सिर्फ लूट ' इस एहसास से वे चकानाचूर हो जाते हैं। अपनढ़ को साहुकार द्वारा फँसाना यही इस चरित्र से स्पष्ट हो जाता है। इस संदर्भ में हरिकिशनदास आग्रवाल का कथन दृष्टव्य है " धनियों और प्रतिष्ठित समुदायों ने निर्धनों और दलितों का अपार शोषण

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('पच्चीस चौका डेढ़ सौ' कहानी से) पृष्ठ 79

2 वही, पृष्ठ 79

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('पच्चीस चौका डेढ़ सौ' कहानी से) पृष्ठ 84

किया है।"[1] सुदीप के पिताजी को गुस्सा आता है और वे साहुकार के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करते हैं।

सदियों से जिनके अज्ञान का लाभ उठाकर उन्हें ठगाया जाता रहा उनमें चेतना जागृत चरित्र को भी कहानीकार ने सहज रूप में प्रस्तुत किया है।

3.9.3 दिनेश -

'भय' कहानी में दिनेश नामक चरित्र है जो अपनी घर की देवी माई-मरदान को बलि चढ़ाने के लिए सुअर लाने किशोर के साथ चला जाता है। इस बलि के लिए उसका पूर्ण विरोध है लेकिन अपनी माँ के दबाव के कारण बलि के झंझट में फँस जाता है। सुअर बाड़े में सुअर का बच्चा खरीदकर काँटना भी उसे ही पड़ता है क्योंकि बलि तो उनकी देवी की थी। बच्चे की चिंकार से मादा सुअर तड़पने लगी थी। वे दोनों मांस की बोरी लेकर घर आते हैं। दिनेश जिस मुहल्ले में रहता वहाँ किसी को भी मालूम नहीं था कि वह दलित है। वह भी इसे छिपाना चाहता है। " दिनेश ने अंदर जाते ही दरवाजा बंद कर लिया था। उसे ड़र था कि इस वक्त कोई घर में न आ जाए । यदि कोई आ गया तो बहुत मुश्किल हो जाएगी । इस ताम-झाम को छिपाना कठिन होगा ।"[2] इसलिए वह सावधानी से काम कर रहा था। उसे सबसे बड़ी चिंता थी कि रामप्रसाद तिवारी, जो अकसर इनके घर आता था, तिवारी को टालना आसान नहीं था। योगवश उसके घर में तिवारी आता ही है लेकिन उसकी माँ दिनेश घर में नहीं है कह कर किसी तरह तिवारी को टालती है। जाते वक्त वह बताता है कि दिनेश को मैंने सहस्त्रधारा रोड़ की मलिन बस्ती में देखा है। दिनेश यह सुनके बहुत ड़रता है। दिनेश को एक तरफ मादा सुअर और दूसरी तरफ तिवारी का चेहरा नजर आने लगता है। " दिनेश की आँखों में धुंधलापन छा गया था। उसे लगा मादा सुअर उस पर झपटने वाली है और तिवारी हाथ में छुरा लिये क्रूरता से दिनेश की ओर बढ़ रहा है।

---

1 हरिकिशनदास आग्रवाल - हमारी परंपरा, पृष्ठ 159

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('भय' कहानी से), पृष्ठ 44

उसने भयातुर होकर माँ को पुकारा।''[1] दिनेश की चींख से माँ भी डर जाती है। दिनेश की आँखें लाल-लाल हो गई थीं। उसके सामने सिर्फ मादा सुअर और तिवारी का चेहरा आता है। वह पूरा पागल होकर दौड़ने लगता है। उसकी हालत देखकर मामा और किशोर भी उसके पीछे भागते हैं। लेकिन उसे रोक नहीं पाते। बलि प्रथा एवं जाति को छुपाने के कारण दिनेश की हालत पागल जैसी हो जाती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ पाठक को अनुभव के एक ऐसे विश्व में ले जाती हैं जहाँ दलित लोग नरक यातनाएँ भोग रहें हैं। कहना होगा कि अपनी कहानियों के चरित्रों को उन्होंने अत्यंत सहज रूप में प्रस्तुत करने के कारण ये चरित्र अपना अलग प्रभाव छोड़ देते हैं।

बिरम की बहू द्वारा अपने स्वार्थ के लिए दलित रमेसर का कुछ क्षणों के लिए फायदा उठाना और फिर उसे कभी न देखना ऐसी स्वार्थी वृत्ति पाठकों के सामने उपस्थित हुई है। अनपढ़ सुदीप के पिताजी को साहुकार वर्षो से लुटता रहा है, उसकी लूट वह चुपचाप सह रहा है लेकिन जब उसे असलियत का पता चलता है तब उसमें अन्याय के विरूद्ध चेतना जागृत होती है। वह क्रोधित होकर साहुकार को अभिशाप देता है। दिनेश के चरित्र द्वारा पौराणिक बलि-प्रथा के कारण उपजे 'भय' के मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया है। सारांशत: ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के सभी पात्रों के चित्रण में उन्हें विशेष सफलता प्राप्त हुई है इसमें संदेह नहीं । इसलिए उनकी कहानियाँ बेहद पठनीय और वास्तविक बन गई हैं।

निष्कर्ष -

ओमप्रकाश वाल्मीकि के अधिकांश पात्र दलित हैं जो शोषित, विवश, संदेह युक्त तथा अन्याय अत्याचार से पीड़ित जीवन जीते हुए परिलक्षित होते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी कहानियों में दलितों की विवशता और पीड़ा तक ही सीमित

---

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम, ('भय' कहानी से), पृष्ठ 47

नहीं रहें बल्कि अपनी दलित चेतना के फलस्वरूप सामंती परंपरा, अन्याय और शोषण के प्रति विद्रोही चरित्र भी प्रस्तुत किए हैं। उनकी कहानियों के चरित्र दलित संघर्ष, विद्रोह, भाव, व्यक्तित्व की प्रतिष्टा, असहाय स्थिति तथा अपनी विवशता में जूझने का संकल्प करते हुए परिलक्षित होते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के चरित्रों का स्वभावगत अध्ययन करने के पश्चात स्पष्ट होता है कि उन्होंने परिस्थिति से दबे हुए चरित्र भी चित्रित किए है। उनके चरित्र - चित्रण में स्वभावगत विशेषता दृष्टिगोचर होती है। उनकी कहानियों में आदर्श चरित्र हैं जिनके विचार से आदर्शता पाठकों के सामने प्रस्तुत होती है। कहानियों में रोचकता प्रदान करने हेतु कुछ खल-चरित्रों को भी उन्होंने प्रस्तुत किया है। परिस्थिति से विद्रोह करनेवाले चरित्रों के साथ-साथ असहाय चरित्र भी पाठकों में बेचैनी बढ़ाने का काम करते हैं। तनावग्रस्त चरित्रों के रूप में ओम्प्रकाश वाल्मीकि जी ने उनकी मानसिक्ता का अलग रूप से प्रस्तुतीकरण किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों के पात्रों को विशेष रूप में चित्रित करके कहानियों को सशक्त बनाने का काम किया है। उनकी कहानियों के पात्रों की मनोदशा यथार्थता को सक्षम बनाती है। उनके अधिकांश चरित्र दलित है, फिर भी दलितों की मित्रता को मजबूत और सक्षम बनानेवाले ब्राह्मण चरित्र भी ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने हमारे सम्मुख उपस्थित किए है जिससे पाठकों की जिज्ञासा बढ़ती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के चरित्र में निर्मम साक्षात्कार है, उनकी पात्रों की चयन दृष्टि के मूल में आम दलित आदमी की पक्षधरता और प्रतिबद्धता है। इसके साथ ही निजी तौर पर उनकी सुरक्षितता बने रहने की चालाकी से अलग ईमानदार बने रहने का हौसला भी है। सारांशतः ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने अपनी कहानियों के सभी चरित्रों को निड़रता एवं प्रभावपूर्ण पदधृति से प्रस्तुत किया है।